International Journal of Arts & Education Research

"आचार्य श्रीराम शर्मा की दार्शनिक विचार धारा"

प्रवीन कुमार*[1]

[1]शोध छात्र, साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

सारांश

मानव के जन्म के साथ ही विचारों का उदय हुआ। मानव मन व परिस्थितियों की अन्तक्रिया से इनकी अभिव्यक्ति शुरू हुई। विचारों के उदय के साथ-साथ उसके आदान-प्रदान की समस्या आयी, जिसे प्रारम्भ में पारस्परिक संकेतों से हल किया गया। इसी विकास क्रम में क्रमशः भाषा का विकास हुआ। भाषा विचारों का वाहन बनी-जो मनुष्यता के एक सिरे से दूसरें सिरे तक इन्हें पहुँचाने का काम करती थीं। बाद में लिपि का निर्माण हुआ। इस पहली लिपि को-प्रथम भाषा को अधिकांश विद्वान 'संस्औत' के रूप में स्वीकार करते हैं। इसे आदि भाषा-भाषाओं की जननी का दर्जा प्राप्त है। विश्व की प्रायः हर भाषा में किन्हीं न कीन्हीं रूपों में संस्औत भाषा के शब्दों का प्रचलन है।

IJAER

*Corresponding Author